प्रकृति के हर्फ़

प्रकृति

……..

मैं ये किताब ईश्वर तथा रेखा जी (हमारी हिंदी फ़िल्म जगत की मशहूर नायिका (भानुरेखा गणेशन) को समर्पित करती हूँ। जानती हूँ कि रेखा जी मुझे पहचानती नहीं, फिर भी... मैं रेखा जी का तहे दिल से सम्मान करती हूँ तथा उनसे बेहद मोहब्बत करती हूँ। सिर्फ़ इसलिए नहीं कि वो एक उम्दा अदाकारा हैं, अपितु इसलिए कि वो एक नायिका के साथ एक नेक दिल इंसान, एक स्वाभिमानी एकल महिला भी हैं। मैंने उन्हें हमेशा एक माँ के रूप में देखा है, मैं उन्हें प्रणाम करती हूँ तथा ये किताब उन्हें समर्पित करती हूँ ……..

कविता सूची

प्रस्तावना

दो लफ्ज़.....

1. मन से अपने भुला दो…….. 11
2. आज कल ये मन…… 12
3. आज मुझे वो लोग…… 14
4. आज फिर मेरा मन……. 16
5. किस किस के लिए……. 17
6. ये मोहब्बत भी क्या….. 19
7. मन मेरा हिलोरें मारे….. 21
8. मुझे तुमसे मोहब्बत…… 22
9. फिर आज इस जहाँ को…… 24
10. देख के मजलिसी-तबस्सुम…… 26
11. अजब दोस्त हमने है बनाया…… 27
12. इस ग़ज़ल का लिबास…….. 29
13. दिल के ज़ख्मों को…… 30

कविता सूची

14. जब जब आपका ख़याल…… 32

15. बड़ी मुद्दत बाद किसी ने……. 34

16. खुली आँखों से देखा…… 35

17. लोग कहते हैं…… 36

18. एक दिन बीमारी से…… 39

19. बंगाली में है मिठास….. 41

20. ग़ज़ल सी नरम है…… 44

21. इन अश्कों की भी……. 47

प्रस्तावना

"प्रकृति के हर्फ़" अर्थात प्रकृति के शब्द। प्रत्येक कला ईश्वर की देन है, मेरा प्रत्येक कार्य उस ईश्वर को समर्पित है। इस किताब में कई तरह के जस्बातों को ग़ज़लों और नज़्मों का लिबास पहनाया गया है। कुछ ग़ज़लें मन की व्यथा,उसके हाव-भाव बयां करती हैं, तो कुछ समाज की बर्बरता, नारी की दुर्दशा बताती हैं। कुछ ग़ज़लों में मोहब्बत के एहसास हैं, कुछ में यादों का उजास है। कुछ में अजब दोस्त की दास्तां है, कुछ में बदले समाज का कारवां है। कुछ में नारी की वीरता है, कुछ में भाषाओं की विविधता है। कहीं बीमारी बनी सहेली, तो कुछ में अश्कों की है पहेली। इस किताब में नज़्में कम, ग़ज़लें ज़्यादा हैं। आशा है ये किताब किसी की भावनाओं को आहत ना करे, तथा उनके मन को भाए।

-प्रकृति